CHEHAK TRUST

2024-2025

Annual Report

WHAT'S INSIDE

NOTE FROM FOUNDER TRUSTEE

ABOUT CHEHAK TRUST

PROGRAM UPDATES & IMPACT STORIES

TRAINING & COLLABORATIONS VOLUNTEERS & INTERNS

FINANCIAL UPDATES GRANTS & BANKING

NOTE FROM FOUNDER TRUSTEE

There can be very few roles that are more challenging to fulfil than that of being the mother of a child with disability. Nobody is willing to spare you, whether it be the family, doctors, teachers, therapists, neighbours or relatives. You are always answerable for your child and always the one to be blamed when things go wrong. In all our years of working with children with disability, we have encountered hundreds of such mothers – some curious and determined, some anxious and scared and some depressed and hopeless. We have talked a lot about the children, but not enough about these mothers and what Sahyog means to them.

Although their introduction to Sahyog is as a source of care and support for their child, over a period of time, it becomes their space too. Whereas, in many other places, they are reduced to merely the instruments through which the experts can achieve their goals, here they are full persons, whole women. Here is a place where they can find friends, talk about their problems, share their dreams and hopes. Teachers listen to them and go the extra mile to accommodate their needs in their plans. They are free to walk in at any time, stay as long as they like, ask questions and participate in the activities of the centre. They are encouraged to enroll in our skill-training workshops where they meet other women from their neighbourhood, learn something new and explore other avenues of self-fulfillment. For many, Sahyog is the one space where they can come and socialise with other women with similar life experiences.

In this year's annual programme, a group of mothers of Sangharsh students got together to perform the games that are part of the Mangala Gauri festival. These young and middle-aged women held each other, leapt, whirled, twirled and danced with abandon. It was such a wonderful sight to these women celebrating life and sisterhood. Vaishnavi, a young woman with intellectual disability marked the center of this formation, following the steps and gestures of the older women around her. Women learn to survive and be happy by sharing stories, joys and sorrows, most of all, by being there. No matter what life throws at them, these women, Vaishnavi included, will never lose hope because now they have each other.

Freedom and self-respect cannot be taught or programmed. They have to be imbibed through experience. For me, this year at Sahyog was another reminder of how much we can achieve just by being a space where everyone feels welcome and at home, in the truest sense.

Neha Madhiwalla

Founder Trustee

ABOUT CHEHAK TRUST

Average of 698887 population served in the communities of Kurla West, L ward and Ghatkopar West, N ward

Sahyog, an initiative of Chehak Trust *is a community-based organization working for the education and empowerment of women and children in the Kurla - Ghatkopar area since the year 2000. We have been working to bring about sustainable change in low-income communities with a special focus on women and children through non-formal education, vocational training, skill training and disability rehabilitation.*

Our Vision

A world in which women and children can realize their potential and drive positive change in

their communities.

Our Mission

We work for sustainable change in women and children from marginalized communities by providing them with

Enrichment education

Disability rehabilitation

Life skills and vocational opportunities.

PROGRAM UPDATES & IMPACT STORIES

Sahyog Roshan- a Beyond School Program

Roshan is a community library program, that offers an after-school engagement for children between the ages of 6 to 15 years. The activities focus on quiet reading, storytelling sessions, book-based activities, and events. Roshan encourages children to develop a love for language and companionship with books. Current Operating Site: Asalpha, Ghatkopar since 2017 & Bail Bazaar, Kurla since 2022

2024 to 2025

Community Library Centres: Nurturing Spaces of Learning and Belonging

Our home-based libraries have grown into vibrant community centers—now active in 11 homes and one local school. These spaces, lovingly curated by women from the community, have become safe, inviting book havens where children gather to read, learn, and dream. Each centre has its own identity, shaped by the woman who leads it. With dedicated support through 10 in-person workshops and 24 online sessions—covering themes like gender, friendship, festivals, humour, environment, and even cancer awareness—these women have gained the skills to manage the libraries with confidence and care.

More than just book spaces, these centres now serve as hubs of connection and creativity. Their caretakers feel a deep sense of ownership and pride transforming not only their homes but the lives of children and families around them.

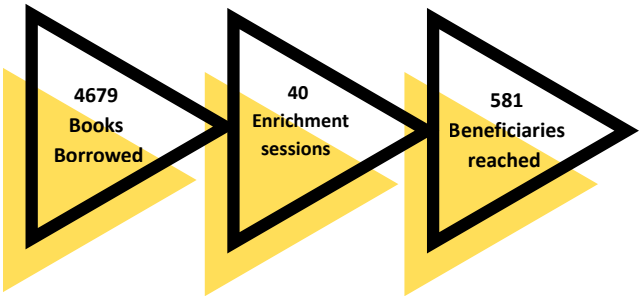

Story of Impact

रानी की कहानी

रानी (बदला हुआ नाम) खुश मिज़ाज लड़की है । हमेशा कुछ न कुछ सोचती रहती है । वह जल्दी दोस्त बना लेती है। उसके रहने से लाइब्रेरी मे रौनक रहती है । उसके अस- पास हँसी - मज़ाक होता रहता है । रानी हमसे साल 2021 मे जुड़ी है । वह अभी १५ साल की है । वह अपनी अम्मी , खाला , नानी और खाला के बच्चों के साथ रहती है। उनके घर के ऊपर एक और मंजिल है जहाँ नानी और खाला के बच्चे रहते है । वह अभी १० वी कक्षा में नजदीक की एक , प्राइवेट, इंग्लिश माध्यम, स्कूल में पढ़ती है। उसका दिन आमतौर पर स्कूल, ट्यूशन पढ़ना, पड़ोस की सहेली के साथ समय बिताना और लाइब्रेरी आने मे बीतता है ।

रानी की बस्ती एक कम आमदनी वाली बस्ती है जहाँ ज्यादातर लोग दैनिक मजदूर है और घर का काम करने जाते है । बस्ती में ज्यादातर युवा नशे की आदत से जूझ रहे है। कई बार गलियों मे गाली - गलोज और झगड़ो की आवाज़े आती रहती है । यहाँ शाम को औरतें सब मिलकर कट्टे पर बैठती हैं , और बातें करती है एक दूसरे से दुख , सुख बाटती है। वही बस्ती में कहीं -कहीं लड़कियों और बच्चों की सुरक्षा की समस्या भी दिखती है। बस्ती में लाइब्रेरी के अलावा बच्चों के खेलने के लिए कोई और सुरक्षित जगह नहीं है ।

चुनौती : माली परेशानी तो है ही। आस -पास नशा करने वाले, लोग ज्यादा है जिससे बच्चों को बाहर जाने में दिक्कत होती है । रानी वहाँ के माहौल मे घुल-मिलकर गाली देने लगी थी । धीरे-धीरे वह पढ़ाई से दूर हो रही थी । घर की परेशानियां भूलने के लिए बाहर की चमक और चकाचौंध में खो रही थी और दूसरे बच्चों का ध्यान भी भटकाने लगी थी।

रानी ने जब रोशन में दाखिला लिया था, तब वह 9 साल की थी| एक छोटी बच्ची, उलझे हुए बाल और टी-शर्ट पहने, अपने दोस्त के साथ आई थी | उस समय रानी अपने घर में बहुत मस्ती करने वाली, भाई के साथ शरारत करने वाली, और बहुत ज्यादा टीवी देखने वाली थी - वो भी कोरियाई ड्रामा देखती थी| लाइब्रेरी में वो ज्यादा बात नहीं करती थी, पर चुपके से दुसरे बच्चो को चुटकी काटना, गाली देना, बुरे शब्द इस्तेमाल करना और दीदी को दूसरों की शिकायत करना उसकी आदत में था । कोई भी सेशन हो या इवेंट हमेशा सब को डिस्टर्ब करना और बस, हर वक़्त सबका अटेंशन लेने की कोशिश करती थी । बहुत बार दीदी उसकी इन आदतों से परेशान होते, उससे बात करते और मिलकर हल भी निकालते, पर रानी पर कोई फर्क नहीं पड़ता था | वह मोबाइल और डिजिटल तकनीकों से भी वाकिफ थी।

जैसे हमने जाना कि घर के आस-पास का माहौल सुरक्षित नहीं था । कई बार रानी बस्ती के इन लोगों से प्रभावित होती थी। उसको लगता - झगड़ा करना, गाली देना ही सही तरीका है । लेकिन जब उसने रोशन लाइब्रेरी में आना शुरू किया, तो उसने जाना कि ऐसी जगह भी है जहाँ - किताब है जिनमें सुंदर भाषा है, सुनने वाली दीदी और बच्चे है | यहाँ रानी को समझने वाले , उसको मौके देने वाले, और साथ में मिलकर बात करने वाले लोग है। शायद इसलिए जब भी वह सेंटर के अंदर आती थी गाली का प्रयोग नहीं करती । जब भी हम उसे जिम्मेदारी देते, तो वह खुद पर फख्र करती और जिम्मेदारी पूरी करती । रानी मे मुझे भविष्य की एक लीडर नज़र आती है ।

मुझे याद है जब वह चैंपियन बनी, उसने अपनी पसंदीदा कहानी " रिककी " का रीड-अलाउड किया था, जिसके लिए उसने तैयारी भी की और आत्मविश्वास भी दिखाया । जब भी कोई ईवेंट होता, रानी पूरी कोशिश करती अपनी जिम्मेदारी निभाने की , ईवेंट से जुड़े सवाल पूछने और अपने सुझाव देने की । वह ज्यादा से ज्यादा इवेंट अटेंड करने की कोशिश करती। वह अपनी बस्ती से पैदल सेंटर या जहां भी इवेंट हो रहा हो वहाँ आती है सहेलियों को साथ लेकर - । मस्ती अभी भी करती है, पर हम आपस मे वादा करते है कि थोड़ा वह हमारी सुने थोड़ा हम भी उसकी सुनें ।

उसे डांस बहुत पसंद है, इसलिए बच्चों को उसे डांस सिखाने को कहते हैं, जिससे उसकी लाइब्रेरी आने की हाजिरी और भी बढ़ जाती । फिलहाल उसके दिनचर्या में बहुत कम समय उसको मिलता है, इसलिए वह हफ्ते में एक बार लाइब्रेरी आती है । घर मे उसकी खाला और रोशन लाइब्रेरी से वह बहुत प्रभावित होती है ।

एक किस्सा हुआ जो मुझे हमेशा याद आता है - हम बच्चों के साथ "पावर वॉक " गतिविधि कर रहे थे। इसमे सभी बच्चों को एक लाइन मे खड़े रहना होता है, और हम एक सिचवेशन पढ़ते हैं। बच्चों को अपनी सोच के अनुसार आगे या पीछे जाना होता है इस गतिविधि में ज्यादातर बच्चे एक साथ होते, लेकिन रानी हमेशा अकेले या कम बच्चों वाली लाइन मे दिखती। जैसे एक सिचुएशन थी "लड़कियाँ सिर्फ सलवार-कमीज नहीं पहन सकती हैं।" इसमें रानी ने अपनी सोच सामने रखते हुए, अकेले और पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे कदम बढ़ाया ।

Story Captured by Roshan team

Future Plans: Growing Our Community Library Centres

- **Expand Reach:** Increase the number of home-based library centres from **11 to 25 active spaces** across the community.
- **Enhance Access:** Grow our **book collection to over 7,000** diverse and inclusive titles for children of all ages.
- **Strengthen Leadership:** Recruit and train **10 new women librarians**, nurturing local ownership and sustainability.
- **Academic Collaboration:** Join the KATHA STEM Academic Project, integrating storytelling with science, tech, engineering, and math.
- **Empower Champions:** Launch a personal enrichment and skill-building program for our existing library "Champions" (independent readers), deepening their growth as community leaders.

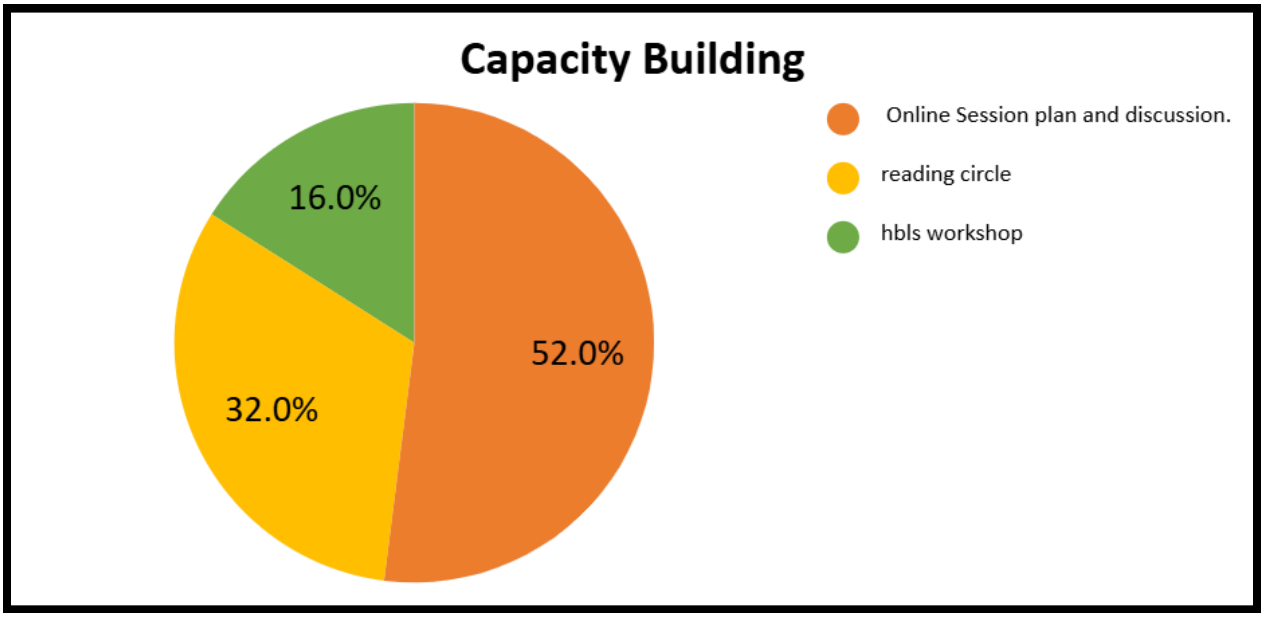

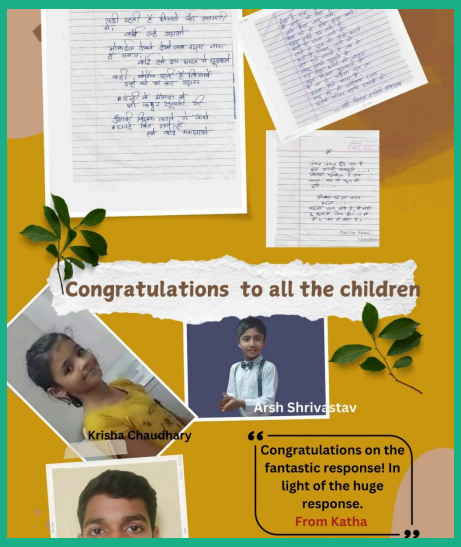

कनीज की कही बातें खुद उसकी जुबानी

मेरी सबसे पहली लाइब्रेरी साइमा अप्पी की स्टार्ट हुई थी। मुझे नहीं पता था कि मेरी एक-दो दिन की जर्नी होगी, butमुझे लगा था कि नॉर्मल बच्चों की तरह ही मैं नॉर्मली आई, बच्चे लोग के साथ मतलब एक्टिविटी करने। फस्ट टाइम सबा दी मेरे साथ आए जब मिले थे । मुझे नहीं पता था की सबा दीदी से इतना अच्छा अटेचमेंट (जुड़ाव) हो जाएगा, मेरा-एक दो साल ऐसे हँसी-खुशी मे निकल जाएगा, समर वेकेशन मे निकल जाएगा ।वहाँ पर मैंने बहुत सारी ऐक्टिविटीज़सीखी और करी थी । मैंने वहाँ पर बहुत ज्यादा इन्जॉय किया । सबके साथ हेल्प की, मस्ती की - मस्ती भी बहुत की। मैंने वहाँ पे कॉमिक्स भी पढ़ी थी ,कहानी भी पढ़ी थी,कहानी भी खुद बताई थी ।

मुझे बहुत अच्छा लगता है। लाइब्रेरी मे केंप मे हम लोग बहुत सारे ऐक्टिविटीज़ कर रहे थे, तो मुझे बहुत मज़ा आया था।और उलटा मैंने डांस भी सीखा और डांस करा भी । मुझे वहाँ से बहुत सारी मोटीवेशन मिली थी –हमें कोई भी चीज चाहिए तो हम उसे पाने के लिए कुछ भी कर सकते है। तो मुझे कोई भी न्यू दीदी मिलते है तो मुझे तो अलग ही अटेचमेंट (जुड़ाव) होता है कि लाइफ मे बहुत अलग-अलग करना है । मुझे बहुत खुशी होती है कि मैं यहाँ पर हूँ और मेरे साथ एक लाइब्रेरी है। लाइब्रेरी की स्टूडेंट हूँ, चैंपियन हूँ, मुझे खुशी हो रही है की मैं लाइब्रेरी की एक छोटी सी मेंबर हूँ।

PROGRAM UPDATES & IMPACT STORIES

Sahyog Sangharsh, Disability Intervention

Sahyog Sangharsh caters to the education and rehabilitation needs of children, adolescents and young adults with disabilities between 0 to 25 years of age. The primary objective of Sangharsh is to help persons with disabilities become self-reliant, enabling them to lead useful lives and be more integrated in the community where they live. It has been initiated in 2003.

Current Operational Site: Asalpha, Ghatkopar since 2022 & Bail Bazaar, Kurla since 2023

2024 to 2025

Strengthening Inclusion and Readiness

The program has witnessed a rise in participation from two key age groups—children under 6 and young adults over 18—reflecting its growing relevance across developmental stages. The School Readiness Program, supported by the Disha Curriculum (developed by the Jai Vakeel Foundation), has significantly improved children's remedial learning skills. This has been further enhanced through consistent therapy interventions (Neurology Foundation) and medication support (ChildRaise Trust Foundation), ensuring holistic care for our beneficiaries and their families. Our intensive family engagement efforts have empowered caregivers to confidently enroll their children in mainstream schools and access rightful entitlements. In parallel, collaboration with mainstream school teachers and a focus on academic inclusion have been reinforced through our Alumni Support Program, helping to bridge gaps in learning and building a stronger foundation.

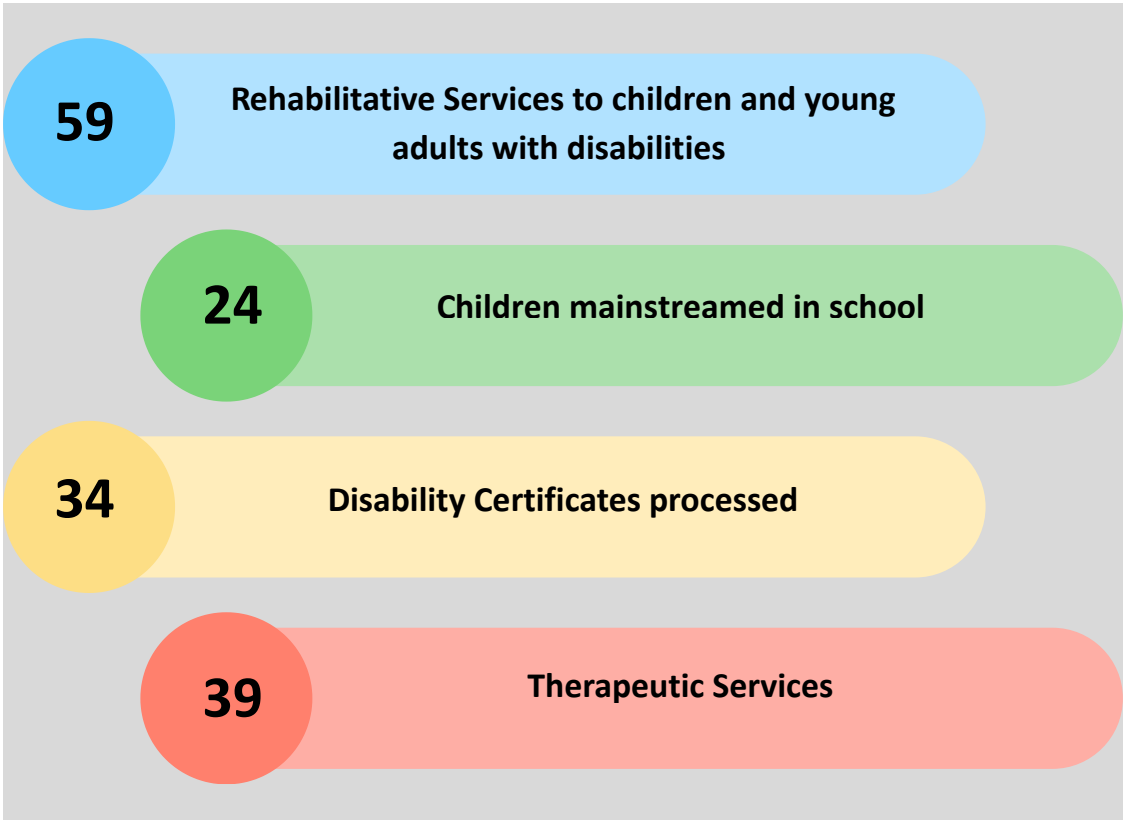

Deepening Outreach and Community Engagement

This year, our outreach and sensitization efforts grew stronger, particularly through focused engagement with primary healthcare workers. Disability awareness sessions enabled early identification and referral of children with disabilities—marking a critical step toward timely intervention.

We also saw renewed energy in our relationships with local youth groups and women's self-help collectives, who actively participated in community events, creating meaningful platforms for dialogue and inclusion.

The spirit of community partnership truly came alive—with contributions in the form of child sponsorships, liaising with key stakeholders, and offering social support by showing up, standing by our side, and celebrating with our children and families.

Story of Impact

अजय 9 साल का बहूत ही हसमुख और मिलनसार बच्चा ह। क्रिकेट खेलना ,बाहर दोस्तों के साथ रहना और उनसे बात करना ,मोबाइल में गेम खेलना उसे अच्छा लगता है। उसकी जॉइन्ट फॅमिली है। उसके पापा रिक्शा चलाते है और मम्मी घर में रहती है। अजय की बड़ी बहन जॉब करती है, उसका भाई पढता है ,घर में सभी के साथ अजय का रिश्ता बहुत अच्छा है। सभी उसकी हर जरूरत का ध्यान रखते है और पूरा भी करते हैं। उसकी नटखट सी हरकतों की वजह से घर में सभी का वह दुलारा है।

अजय का जन्म पूरे 9 महीने में सीजर से हुआ थ। जन्म के बाद रोया नहीं था। जन्म के दौरान उसके दिमाग की नस दब गई है, ऐसा डॉक्टर ने बताया था। 2 साल पूरे होने के पहले उसको फिट आना शुरू हुआ था। गाँव में फिट का इलाज़ जारी था ,मुंबई आने के बाद प्राइवेट दवाखाने से भी इलाज करा रहे थे। अभी भी फिट की दवा शुरू है। अजय को बचपन से ही चलने फिरने, बोलने और देखने में थोड़ी दिक्कत है। शब्दों को दोहराने की कोशिश करता है,चीजों को मुठ्ठी से पकड़ता है। उंगलिया टाईट होने की वजह से, छोटी चीजों को पकड़ना थोडा मुश्किल है। आँखों से थोडा तिरछा देखता है।

जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, उसने कुछ खास व्यवहार प्रदर्शित करना शुरू कर दिया। वो छोटी छोटी बात पे ज़िद करता था, घर में किसी की भी बात नहीं सुनता था। गुस्सा आने पे सब को मारता था ,चीजें फेकता था। उसके सारे काम ज़्यादातर मम्मी और उस की बहन करते थे। ज़िद में आकर, जो काम उसको आता है, वह भी नहीं करता था। अजय की मम्मी को उसकी पढ़ाई, बर्ताव,बोलता नहीं है और उसकी शारारिक दिक्कतों के बारे मे बहुत चिंता थी। अजय के कोई डॉक्यूमेंट भी नहीं बनवाये थे ।

तभी अजय की मम्मी को सहयोग संघर्ष के बारे में अन्य पेरेंट्स द्वारा जानकारी मिली थी। संघर्ष में आने के बाद अजय का सभी सलाहकार से असेसमेंट कराया गया। काम की शुरुआत बोलने की कठिनाइयों से हु,रोज ओरल मसाज ,लिप्स बंद रखना; जब भी मूह से पाणी गिरता है, तो उसको अंदर लेने बोलना; साउन्ड दोहराना; इमिटेट करना; सिम्पल बेसिक फमिल्यर वर्ड्स प्रैक्टिस कराना; घर और सेंटर पे ऐक्टिविटी के दौरान ये सब फॉलो करना; इन सब की वजह से उसकी स्पीच मे सुधार नजर आया है। फ़िज़ियोथेरिपी रेगुलर करने की वजह से, चलने में बैलन्स में काफी सुधार हुआ है। उसका एकेडेमिक, सामाजिक, डेली लिविंग एक्टिविटी में भी अचिवमेंट हुआ है। घर और सेंटर पे ऐक्टिविटी के दौरान अच्छा बर्ताव करने पे उसे प्रोत्साहन देने पे वह दोबारा वैसे ही बर्ताव करता है। जैसे कि चीज़ या खिलौना छीनने के बदले मांगना, ऐसे बेसिक रुल्स घर ओर सेंटर पे फॉलो करने की कोशिश करता है। ऐक्टिविटी में, एक दुसरे की हेल्प करना, खुद से करने का मोका दिए जाने पर इन सब से अजय में चेंजेस आए है।

टीचर्स ने दिशा मूल्यांकन के माध्यम से उसके लिए लक्ष्य बनाये, घरेलू लक्ष्य पेरेंट्स के साथ चर्चा करके बनाये। जब उसका पहला मूल्यांकन हुआ, बहुत सुधार देखा गया। माल्टीसेंसरी तरीके से ,सिग्न लैंग्वेज के माध्यम से,फ़्लैश कार्ड, प्रैक्टिकल एक्टिविटी जैसे साधन की मदद से अजय में पूर्व पठन, पूर्व लेखन और पूर्व अंकगणित में भी काफी अचिवेमेंट आया है। पहले 1 से 5 तक लिखता है; A to F तक लिखता है; दोनों हाथों का इस्तेमाल करता है; एक्टिविटी करते time बड़ी बीड्स को रस्सी मे पिरोता है; पज़ल करना, बॉल को फेकना पकड़ना etc, भी कर सकता है। थोड़ा टाइम लेता है ,लेकिन सेंटर और घर में अपने काम खुद से करता है। कभी कभी मम्मी या टीचर की थोड़ी मदद लगती है ,एक्टिविटी के दौरान टीचर के दिए हुए इंस्ट्रक्शन को अनुसरण करता है ,घर पे भी अब सभी की बात सुनता है, स्कूल में छोटे बच्चों की मदद करता है। पेरेंट्स दिए हुए होम गोल से जुड़े टास्क का विडियो टीचर को सेंड करते हैं।

अजय के साथ काम करने में बहुत मज़ा आता है। एक साल में अजय में सभी क्षेत्रों में बहूत अचिवएमेन्ट हुआ है। कोई भी ऐक्टिविटी वह बहुत जल्द सिख जाता है । खुद ध्यान दे कर करता है और दोबारा करने की पूरी कोशिश करता है। बीच बीच में, थोड़ा प्रोत्साहित करना होता है । सेंटर और घर में सिखाए हुए रुल्स को फॉलो करता है, साथ ही पेरेंट्स सपोर्ट भी बहोत अच्छा ह। अजय में स्कूल जाने के पहले की सारी कौशल प्राप्त हुई है। पैरेंट्स भी एडमिशन करने के लिए राजी हैं। इस साल अजय संघर्ष में रहेगा ओर साथ ही साथ उसके दस्तावेज़ पे काम जारी रहेगा । अगले साल उसका एडमिशन स्कूल में करेंगे।

Captured by Gulshan Khan, Special Educator, Sahyog Sangharsh

Future Plans: Deepening Impact and Sustainability

- Strengthen the **Alumni Support Program** to provide continued academic and emotional guidance to former beneficiaries.
- Enhance **training and capacity building for caregivers, teachers, and volunteers** to ensure inclusive, quality support for every child.
- **Collaborate with Together Foundation Trust** to introduce a vocational training program, expanding pathways for skill development and independence.

"My fieldwork experience at Chehak Trust has been very meaningful. I got the chance to work closely with children, young adults, and their families and understand their daily lives and struggles. Through different sessions, home visits, school outreach, and awareness programs, I learned how important community-based support is for children with disabilities. The environment at the organization was welcoming and supportive.

I would like to thank Ruvina ma'am for guiding me with patience and care throughout the year. She always encouraged me to try new things and reflect on my work. I also want to thank all the staff members who helped me learn in small and big ways—whether it was during sessions, group activities, or field visits. Their cooperation made me feel comfortable and confident.

Overall, this experience has helped me grow personally and professionally, and I'm truly grateful to be part of Chehak-Sahyog."

Vidhupriya, MA in Social Work, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai."

PROGRAM UPDATES & IMPACT STORIES

Sahyog Umang - Vocational Training, Scholarship & Mentorship Program

The Sahyog Umang Program works towards skills building through the Scholarship & Mentorship Program (2017), for students at the higher secondary and graduate level and the Vocational Training Program for women (2018). While for students the program provides financial assistance, along with perspective-building & personality development workshops and mentoring to guide them to overcome challenges faced in the life. With women the focus is to enable them to support themselves economically and also contribute to their family's wellbeing.

Current Operational Site: Asalpha, Ghatkopar since 2020 & Bail Bazaar, Kurla since 2023

2024-2025

In 2024, the new SAM cohort was launched with 15 students, carefully selected through referrals from Roshan Library Champions and other Sahyog community initiatives. The program included 10 intensive English Language Development on speaking fluency, and reduced writing errors. They have built the students confidence in speaking the language and helped in minimizing grammatical errors in school and college work.

They were also offered some thematic Sessions (4 total) focused on:

- Gender and social perspectives
- Digital literacy
- Mental health and stress management
- Career exposure beyond traditional gender roles

These sessions significantly broadened the students' worldview and empowered them to make informed, self-directed choices about their futures. The vocational training sessions with the women in collaboration with Shrimad Rajchandra Love and Care Foundation continued with an increase in enrolment. Besides skilling themselves, these women developed a bond with each other and learned to look at themselves as individuals instead of just the multiple roles they fulfill. They also inspired and encouraged each other to step out of the restrictions and constraints that they have internalised and value themselves as individuals. Some of these women have gone ahead to become entrepreneurs and are making a living out of the skills they learn.

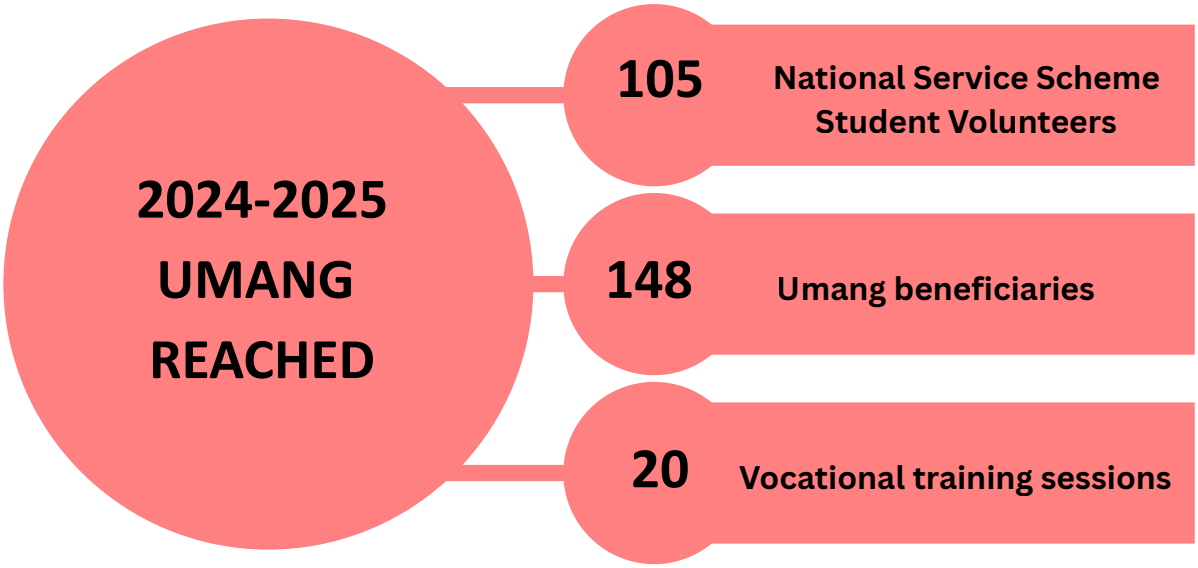

Story of Impact

नाज ने आठवी कक्षा की पढाई पूरी कर के सहयोग के उमंग प्रोग्राम से २०२४ में जुडी | नाज के परिवार में माँ, पिताजी एक भाई और दो बहने है | वह घर के पास के स्कूल में पढाई करती है | उसे चित्रकला और हस्तकला करने का बहुत शौक है उसे पढाई करने का भी बहुत शौक है। पर अपने स्वास्थ की वजह उसे स्कूल जाना बंध करना पड़ा और हॉस्पिटल में एडमिट होना पड़ा। नाज़ को किडनी की बीमारी है। शुरुवात में उसे ३० प्रतिशत ही किडनी थी पर गलत इलाज की वजह से नाज़ की दोनों किडनी ख़राब हो चुकी है जिस वजह से नाज़ का डायलासिस चल रहा है, जिस के लिए हफ्ते में 2 दिन डायलासिस करना होता है |

इतनी कम उम्र में नाज़ बहुत से सरकारी/प्राइवेट अस्पताल के चक्कर काट चुकी है। खुद को स्वस्थ करने के लिए, ताकि वह भी बाकि बच्चो की तरह नार्मल ज़िन्दगी जी सके, नाज़ हर मुमकिन कोशिश करती है। आठवी कक्षा में वह ज्यादा स्कूल अटेंड नही कर पाई। लेकिन सेल्फ स्टडी करके उसने एग्जाम दिया और बहुत अच्छे नंबर से पास हुई है | नाज़ ने आगे की पढाई भी जारी रखी है |

नाज़ ने अभी तय नही किया है उसे भविष्य में क्या करना है और क्या बनना है, पर उसे लगता है कि शिक्षा उसे कामयाबी के रास्ते दिखाएगी | वैसे नाज़ के स्वास्थ के चलते, उसके परिवार को काफी संघर्ष करना पड़ता है। पर नाज़ अपनी तरफ से परिवार को खुश रखने की पूरी कोशिश करती है | नाज़ खुद के लिए एक डोनर की तलाश में है। ट्रांसप्लांट ऑपरेशन का डॉक्टर ने भी सुझाव दिया है। नाज़ भविष्य में खुदको एक कामयाब इंसान के रूप में देखना चाहती है।

Captured by Shivani Singh, Co-ordinator, Sahyog Umang.

Future Plans: Empowering Through Learning and Leadership

- Introduce **Vocational Training for Women** to enhance economic independence and skill-based employment opportunities
- Continue **Supporting a Core Group of Scholars**, providing mentorship, academic guidance, and emotional support to help them thrive.
- Build a **Strong Volunteer Base**, engaging women from the community and student volunteers to strengthen programme delivery and foster local leadership.

"English speaking sessions have been the best due to the fun interactive games, I enjoyed each class and learned new vocabulary words. I would like to gain more confidence in my speaking skills"

Shruti Khot, SAM Scholar

TRAINING & COLLABORATIONS VOLUNTEERS & INTERNS

STAFF CAPACITY BUILDING ACTIVITIES

- Training on digital story-telling - Point of View (Mumbai)
- Certificate course for Child Development Aide - Ummeed Child Development Centre (Mumbai)
- Story Pedagogy - Katha Online
- Using art with children - Artsparks- Edsparks Collective, Bangalore
- National writers' workshop - Katha Online
- Documentation strategies and skills - Rising Flame (Bangalore)
- Child Development Centre- Aashayein
- Developing teaching learning material for children with disabilities - Muskaan Foundation
- Foundational Literacy- Jodo Gyan (Delhi)
- Workshops on Communication strategies and Organization Development - Atma
- Content writing and Canva workshop- Akalpan (Bhopal)

INSTITUTIONAL COLLABORATIONS

- Shrimad Rajchandra Love & Care Foundation
- National Service Scheme (NSS) Mumbai Divisional Centre
- NSS Dept., Karachi College of Commerce & Arts
- NSS Dept., K.J. Somaiya College of Commerce & Science
- Jai Vakeel Foundation
- Childraise Trust Foundation
- Neurology Foundation
- Muskaan Foundation for People with Multiple Disability
- Ummeed Child Development Centre
- ARMMAN
- Mukkamaar Foundation
- Apnishala
- G.J. Kapoor Foundation

Student Interns & Volunteers

Vivekananda Education Society of Arts, Science & Commerce

Yasvi Savla, Tasleem Shaikh, Anchal Vishwakarma, Vishal Shivraj Suwasiya, Zainab, Ebrahim Tambuwala

NMIMS College: Sharad Shrinivas, Janav Shah, Darshan Poddar, Hriday Harmilapi

Tata Institute of Social Sciences, Dept. of Social Work; Sneha Kale, Amit Singh & Vidhupriya.

"I would love to share my experience and insights of teaching Spoken English to the SAM scholar students. Using creative and fun way methods, the students enjoyed every session and could grasp easily.

I saw the students grow from struggling to read and write to confidently expressing themselves. They even developed their English language skills and were confident by the end of the course. Seeing their growth was incredibly rewarding.

Through this experience, even I have learnt a lot. Their eagerness to learn and spark of understanding in their eyes was priceless.I am humbled to be a part of this noble cause."

Sweta Bhojani, English Tutor

FINANCIAL UPDATES GRANTS & BANKING

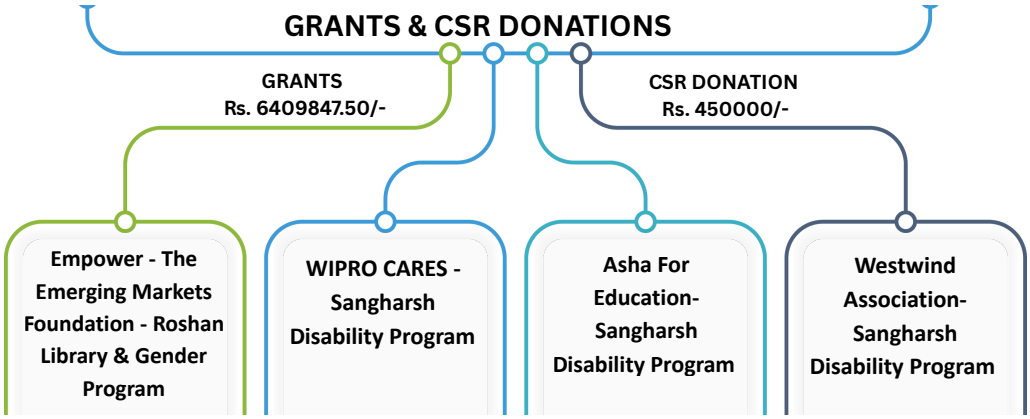

INDIVIDUAL DONATION Rs. 702013.10

Simran Kailash, Debashish, Chitresh Sinha, Sunil Kumar, Karhikeyan, Kirti Sachin, Swati Saxena, Shivani Singh, Shankar Sakat, Ummulwara, Sweta Bhojani, Sudhir Bhakta, Taruna Kumar, Caroline Dsouza, Sonal Gandhi, Hardik Madhiwalla, Bilquis Shaikh, Lotus Trust, Vrajlal Gandhi, Sumit Sahay, Ashish Joshi, Mishtee Gandhi, Deep Asher, Vahida Nainar, Saira Nainar, Naresh Popat, Mrunal Asher, Sameer Shah, Aliasgar Contractor, Karishma Dalal, Reema,Naman Pande, Jithin Isaac, Govind, Sajana, Piyush, Savio Fernandes, Nandini Baijal, Dcruz, Leena Abraham, Dharmendra Yadav, Nitin Kumar Khabiya, Akhila.

DONATION IN KIND

Sheela Sinha, Gavin Dsouza, Shrimad Rajchandra Love & Care Foundation, Sindhu Varghese

FOR FOREIGN DONORS

BANK NAME- STATE BANK OF INDIA
BRACH ADDRESS: FRACELL, 4TH FLOOR, STATE BANK OF INDIA , NEW DELHI, MAIN BRANCH, 11, SANSADMARG. NEW DELHI 110001
ACCOUNT BENEFICIARY NAME : CHEHAK TRUST
ACCOUNT NO : 40056556894
IFSC CODE: SBIN0000691 BANK SWIFT/BIC: SBININBB104

BANKING DETAILS

CHEHAK TRUST IS REGISTERED UNDER THE MAHARASHTRA PUBLIC TRUST ACT, 1950 (REG, NO E-21112 MUM) AND UNDER FOREIGN CONTRIBUTION REGULATIONS ACT FOR RECEIPT OF FOREIGN DONATIONS (REGISTRATION NO 083781240)
ALL DONATIONS MADE TO CHEHAK TRUST ARE ELIGIBLE FOR EXEMPTIONS UNDER SECTION 80G UNDER INCOME TAX

FOR INDIAN DONORS

BANK NAME- THE SHAMRAO VITHAL CO-OP BANK LTD
BRACH ADDRESS: SVC TOWERS, JAWAHARLAL NEHRU ROAD VAKOLA SANTACRUZ EAST, MUMBAI 400055
ACCOUNT BENEFICIARY NAME : CHEHAK TRUST
ACCOUNT NO : 102603130000543
IFSC CODE: SVCB0000026

SOCIAL MEDIA

Web: www.sahyogchehak.org.in

FOLLOW US :
FACEBOOK ID: SAHYOGMUMBAI

HTTPS://WWW.INSTAGRAM.COM/CHEHAKTRUST/

एक कविता

एक सहासी लड़की, 9 साल उम्र और एनर्जी से भरी,

करती जो दिल में आए, कहाँ उसने किसी की सुनी ।

जब मिली मुझसे रोशन लाइब्रेरी मे, ढीली कमीज, बिखरे बाल, आँखों में चमक भरी ,

साथ अपने दोस्तों के आई किताबों की दुनिया में, पर सिर्फ करती मस्ती !

किसी को चिढ़ाना , दोस्तों को सताना , पापा की फेवरेट, माँ की बेटी प्यारी,

रहती असल्फा में,क्लास थी उसकी तीसरी ।

न जाने क्या मिलता उसको रोशन सेंटर पे, आती हर रोज़, करती दीदी, दीदी ,

धीरे-धीरे किताबों में खोने लगी, रीड अलाउड , स्टोरीटेलिंग वह करने लगी।

अब साथ उसका हमारा 3 साल से ज्यादा हुआ , वह भी रोशन लाइब्रेरी की चैंपियन बनी ,

क्यूरियस है वह , बेबाक है वह , सवाल पूछती , ईवेंट की लेती जिम्मेदारी भी ।

अब उसकी ज़िंदगी मे आया तूफान, जब पता चला घर का बुरा हाल,

पल भर में बदल गए हालात , माँ की बनी उम्मीद क्यूंकी पापा साथ नहीं उनके ,अकेले रह गई पापा की परी ।

एक जगह है जो उसकी अपनी है, जानती थी , लाइब्रेरी में आकर टेंशन भूल जाती थी,

बस्ती मे यह जगह, दीदी का होना , किसी से बातें करना , किताबें पढ़ना – जिससे उसको अब नहीं लगती लोगों की बातें बुरी ।

क्या पता यह भी रानी भी भटक जाती अगर यह जगह नहीं होती,

उसकी हिम्मत बनी , दोस्त बने , इससे उसका अब भी सफर (suffer) है जारी ।

एक सहासी लड़की, 12 साल उम्र और एनर्जी से भरी ।